Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 8, pp 549-552, August, 2026

# माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

*डॉ0 सौरभ कुमार प्रजापति*

**एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा गज्जन दास बालिका महाविद्यालय धरवाँ, जेवल, गाजीपुर**

**सारांश –**

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक तभी होगा, जब माध्यमिक शिक्षा में शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध होंगे और तभी नयी शिक्षा नीति 2020 भी सार्थक सिद्ध होगी। इसके लिये हमें दृढ़ निश्चय लेना होगा कि हमारी वैदिक शैक्षिक संकल्पना तथा धार्मिक शिक्षा हमें एक शिक्षित व्यक्ति बनाती थी न कि केवल साक्षर। दुर्भाग्य से पाश्चात्यीकरण को गलत ढ़ंग से परिभाषित किया गया, जिससे व्यक्ति मात्र यंत्रवत बनकर रह गया है। हमारी समितियों, आयोग व शिक्षा नीतियों ने समय–समय पर भारतीय मूल्यों को पोषित करने वाले बिन्दुओं पर विचार किया है परन्तु उन्हें 100 प्रतिशत जमीन पर लागू नहीं किया जा सका। उसके पीछे पाश्चात्यीकरण की आँधी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार ने वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद और साम्प्रादयिकता जैसी घटनाओं में बाढ़ सी आ गयी। उसी से बचने के लिये हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने चिन्ता व्यक्त की और दृढ़ संकल्प लेते हुये डॉ0 कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में निर्मित नयी शिक्षा नीति 2020 को अनुमोदित किया और लक्ष्य रखा कि बचपन, मातृभाषा व मातृमूल्यों के आधार पर संस्कारित किया जाय। अपनी बौद्धिक परम्पराओं को पोषित किया जाय, जिसके साथ अपने पुराने कौशलों जो सृजनात्मकता, कलात्मकता और सौन्दर्यपरक मूल्यों का प्रसार हो सके। साथ ही वर्तमान पीढ़ी को आधुनिक मूल्यों यथा सूचना तकनीकी और कृत्रिम बुद्धिमता का ज्ञान दिया जाय। वैश्विकता को ध्यान में रखते हुये भारत में बच्चों को शीर्ष तक पहुँचाना ही शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षाविदों, विद्यार्थियों तथा व्यवसायियों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा और हमारे युवा शिक्षकों के लिये प्रेरणा स्रोत तथा पथ प्रदर्शित करता रहेगा, ऐसा शोधकर्त्ता का विश्वास है।

**मुख्य शब्द–** माध्यमिक विद्यालय, शिक्षण अभिक्षमता, मध्यमान, मानक विचलन, सी0आर0 परीक्षण इत्यादि।

## प्रस्तावना–

शिक्षा किसी भी व्यक्ति व समाज के लिये विकास की धुरी है और यह किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु है। बिना इसके सभी बाते अधूरी साबित होती हैं। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है बल्कि चेतना और उत्तरदायित्वों की भावना को जागृति करने वाला औजार भी है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। शिक्षा के माध्यम से ही भारत के गांवों को सामाजिक परिवर्तन और ग्रामविकास की विभिन्न योजनाओं से जोड़ा जा सकता है। शिक्षा और मूल्य का गहरा सम्बन्ध है। मूल्यहीन शिक्षा वास्तव में शिक्षा ही नही है। मूल्यो की शिक्षा प्रदान कर बच्चों में अच्छे संस्कार भरे जाते हैं उनकी सुप्त चेतना को जगाया जा सकता है जिससे कि वे अपने विकास के साथ–साथ अपने समाज और देश के विकास में योगदान कर सकते हैं। शिक्षा का महत्व तभी है जब उन्हें आत्मसात् करने के लिये उच्च शिक्षण अभिक्षमता वालेशिक्षक उपलब्ध हो क्योंकि शिक्षा प्रदान करने के वे ही जिम्मेदार है। शिक्षक समस्या समाधान कौशल, महत्वपूर्ण सोच के तरीकों और आवश्यक विषयों की बुनियादी अवधारणाओं को पढ़कर भविष्य के लिये छात्रों को तैयार करते है।

## अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

समाज का शिक्षा पर प्रभाव और शिक्षा का समाज पर प्रभाव नकारात्मक नहीं जा सकता है क्योंकि समाज शिक्षा की व्यवस्था करता है समाज के स्वरुप का प्रभाव शिक्षा की प्रकृति पर पड़ता है जैसा समाज का स्वरुप होगा वह शिक्षा को वैसे ही व्यवस्थित करता है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है तो शिक्षा की प्रकृति उद्देश्य उसके संगठन एवं वातावरण में लोकतांत्रिक आदर्श प्रकृति होती है। तानाशाही हो समाज की शिक्षा में अनुशासन व आज्ञाकारिता आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी देश की शिक्षा में समाजवादी तत्व व स्वरुप दिखायी देते हैं।

समाज की स्थिति व स्वरुप जैसे–जैसे बदलता जाता है वैसे–वैसे शिक्षा का रुप भी बदलता जाता है। भारत में आदि काल से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी इसके प्श्चात् समय के साथ आधुनिक युग आया और देश ने राजतन्त्र से प्रजातन्त्र में प्रवेश किया और शिक्षा में लोकतांत्रिक आदर्श एवं मूल्यों को समावश किया गया सामाजिक असमानता, कुरीतियों एवं आर्थिक असमानता को दूर वर्ग विशेष के लिये शिक्षा व्यवस्था से सबके लिये शिक्षा को मुख्य लक्ष्य माना गया और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराया गया।

## सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन–

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया है।

## साहिलअहमद खान व खान फरहतुमनिशा;2016):

''यह अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का रायपुर जिले के 440 अध्यापकों पर सर्वे किया गया जिसमें 240 पुरुष व 200 महिला शिक्षक थी माध्यमिक के 240 में 130 पुरुष तथा 110 महिला थी जबकि उच्च माध्यमिक के 200 में 110 पुरुष व 90 महिला थी। शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता की माप जे0 पी0 और आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण से की गयी तथा समायोजन की माप एस0 के0 मंगल के उपकरण से हुयी। परिणाम व्यक्त करते है कि उच्च माध्यमिक के लिये सहसम्बन्ध बहुत कम था जबकि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अभिक्षमता व समायोजन के मध्य संहसम्बन्ध औसत था।''

## मुदालियर अल्दुल्ला;2016):

''शिक्षा विभाग सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ काश्मीर के शिक्षा विभाग द्वारा अध्ययन किया गया। शिक्षण अभिक्षमता शिक्षक के उन गुणों, लक्षणों और कौशलों को सन्दर्भित करता है जो एक व्यक्ति के पास अपेक्षित रहता है या आत्म प्रयास के दौरान प्राप्त होता है शिक्षण की प्रवृत्ति पुनः उत्पन्न होती है। अतः शिक्षण अभिरुचि एक विशिष्ट योग्यता, क्षमता, रुचि, संतुष्टि और शिक्षण व्यवसाय में उपयुक्तता है। अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति का अर्थ व्यक्ति की भावनाओं व्यवहारों तथा व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता से है यदि शिक्षक प्रतिबद्ध है और रचनात्मक दृष्टिकोण रखता है तो निश्चित ही उसका प्रदर्शन प्रभावकारी होगा। **रिचर्डसन ;2003)** के शब्दों में शिक्षा एक राष्ट्र निर्माण आन्दोलन है शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करती है यदि शिक्षक अच्छी तरह से प्रशिक्षित प्रेरित और पेशे के प्रति प्रतिबद्ध है तो सीखने में वृद्धि होगी। शिक्षण एक ऐसा पेशा है जिसे एक ऐसे व्यवसाय के रुप में वर्णित किया जा सकता है जो अत्यधिक विशिष्ट बौद्धिक सेवायें प्रदान करता है जो उच्च स्तर की रचनात्मक सोच की प्रवृत्ति रखते है और अनुसंधान में एक विस्तृत श्रंखला का योगदान करती है। शिक्षण एक कला है जो एक व्यक्ति के एक प्रभावी पेशे के लिये तैयार करती है, ताकि अपने अधीनस्थों को सर्वोत्तम नेतृत्व शैली प्रदान कर सके। मनोवृत्ति उत्तेजनाओं के प्रति विशेष तरीके से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति है।''

**अध्ययन के उद्देश्य–** प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन को विस्तारित किया गया–

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पना–** उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी।

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध विधि**– प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

**जनसंख्या–** जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है । प्रस्तुत शोध में जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के क्रमशः शहरी 265 शिक्षकों तथा ग्रामीण 135 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है ।

**न्यादर्शन (उचसपदह)–** जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ के इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन (उचसपदह) कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श (उचसम) कहते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

## शोध उपकरण–

शिक्षण अभिक्षमता मापनी का निर्माण शोधकर्त्ता ने स्वयं किया है जिसके लिये कुल 68 कथन बनाया था। यह तीन बिन्दु मापनी सहमत, अनिश्चित तथा असहमत पर बना है। मानकीकरण हेतु 370 लोगों पर प्रशासित करके उन पर के 29ः तथा नीचे के 27ः लोगों के परीक्षण से प्रत्येक कथन का टी0 विश्लेषण किया जो .05 स्तर पर सार्थक रहा उसे चयनित किया गया इसमें कुल 50 कथन अन्तिम प्रारूप में चयनित हुये। परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक स्पिलिट हॉफ मेथड से 0.84 प्राप्त हुआ और जे0पी0 सिंह के शिक्षण अभिक्षमता मापनी से वैधता गुणांक 0.92 प्राप्त हुआ। मानक के रुप में टी0 परीक्षण को माना गया मापन हेतु सकारात्मक कथनों के लिये क्रम संख्या ;2, 1, 0) ;सहमत, अनिश्चित तथा असहमत) पर और नकारात्मक के लिये ;0, 1, 2) था। परीक्षण के सकारात्मक कथन ;1, 4, 5, 7, 9, 12, 13, 14, 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 33, 39, 40, 41, 42, 49, 50 = 23) तथा नकारात्मक कथन ;2, 3, 6, 8, 10, 11, 16, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 29, 34, 35, 36, 37, 38, 43, 44, 45, 46, 47, 48 = 27) हैं। न्यूनतम अंक 0 और अधिकतम अंक 100 आ सकता है।

## निष्कर्ष–

**पुरुष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य का विश्लेषण-**

**तालिका–1**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | सी0आर0मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष शिक्षक | 257 | 68.75 | 15.24 | 1.83 | 3.63 |
| महिला शिक्षक | 143 | 62.13 | 19.36 | | |

कि;398द्ध ंज ण्01 त्र 2ण्60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 1 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर पुरुष शिक्षकों के मध्यमान 68.75 तथा मानक विचलन 15.24 जबकि महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान 62.13 तथा मानक विचलन 19.36 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 1.83 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य 3.63 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2. 60 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।'' निरस्त हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता हैं कि पुरुष शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक होती है। इस परिणाम का समर्थन शर्मा (2016) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि पुरुष शिक्षक बहिमुखी स्वभाव के होते है और समाज में विचरते रहते है उन्हें किसी तथ्य को स्पष्ट करना अच्छे से आता है।

**परिकल्पना–2 ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य मूल्य का विश्लेषण-**

**तालिका–2**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | सी0आर0मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण शिक्षक | 135 | 68.72 | 19.36 | | |
| शहरी शिक्षक | 265 | 68.14 | 18.89 | 2.05 | .283 |

कि;398द्ध ंज ण्01 त्र 2ण्60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 2 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान 68.72 तथा मानक विचलन 19.36 जबकि शहरी शिक्षकों के मध्यमान 68.14 तथा मानक विचलन 18. 89 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 2.05 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य .0283 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से कम है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता हैं कि ग्रामीण शिक्षकों व शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में समान होते है। इस परिणाम का समर्थन सिंह व कौर (2018) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि शिक्षण अभिक्षमता व्यक्तिगत विशेषता होती है न कि क्षेत्रगत विशेषता है।

## शोध की शैक्षिक उपयोगिता–

शिक्षा के क्षेत्र में जो अनुसंधान किये जाते हैं उनका शैक्षिक जगत से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। शोध तथी सार्थक माना जायेगा जबकि उससे प्राप्त निष्कर्ष सार्थक हों तथा समस्या के समाधान में योगदान दें एवं भावी अनुसंधानकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करा सकें। शिक्षा के क्षेत्र में किये गये शोधों के परिणामों व निष्कर्षों का वर्तमान समय में गतिमान शोधों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा पूर्व के परिणाम व निष्कर्ष वर्तमान में शोधों को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

किसी भी शोधकर्त्ता के लिए यह सम्भव नहीं होता है कि वह समस्या से सम्बन्धित सभी सीमाओं अथवा सभी क्षेत्रों को अपने अध्ययन में समाहित कर सके। समय, धन तथा साधनों की परिसीमाओं के कारण शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध का गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष व परिणाम भावी शोधकर्ताओं के लिए निश्चिम रूप से मददगार सिद्ध होंगे। निःसंदेह प्रस्तुत शोध के परिणामों के द्वारा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमतासे सम्बन्धित बहुत महत्वपूर्ण व आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं जो भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए शोध में सहायक होंगी परन्तु कुछ ऐसे भी प्रश्न हैं जो कि अब भी अनुत्तरित हैं जिनके समाधान के लिए अनुसंधान प्रयासों की आवश्यकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. शर्मा, आर0ए0 (2008) : भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2008) : अधिगम एवं शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ0 नीता (2008) : बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नागर, डॉ0 बीनू एवं राजपूत, डॉ0 आशा (2010) : बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (2012) : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं पाठक, के0पी0 (2012) : बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014) : बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 (2020) : अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, (2013) : सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

10. राय, पारस नाथ (2008) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

11. सिंह, अरूण कुमार (2017) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।